





ལགོང་ས་མཚོག་གིས།

བོད་ཡིག་བོད་པས་མ་སྦྱངས་ན་སྦྱས་སྦྱོང་།  
བོད་ཡིག་ལ་བོད་པས་བདག་པོ་མ་བརྒྱབ་ན་སྦྱས་རྒྱག་  
དེར་བརྟེན་བོད་ཡིག་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་ཤེས་ཡོན་ལ་  
དང་དོད་དོ་སྦྱང་བྱེད་རྒྱ་ཤིན་ཏུ་གལ་ཆེན་པོ་རེད།



ཅིག་ལྟར་ལྟར་ལྟར་ལྟར་།

མིང་.....  
མིང་གཞུང་ཨང་..... གྲལ་ཨང་.....  
འདིན་གྲ་..... རྒྱོད་གྲ་.....

Printed and donated for free distribution by  
**The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation**  
11F., 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.  
Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415  
Email: [overseas@budaedu.org](mailto:overseas@budaedu.org)  
Website: <http://www.budaedu.org>

**This book is strictly for free distribution, it is not for sale.**

ཕྱག་དཔེ་འདི་ཚོས་སྤྱོད་དུ་འབྲུལ་རྒྱུ་ལས། ཚོར་བསྐྱུར་མི་ཚོགས་པ་དགོངས་འཇགས་ལྟ།

ଓଡ଼ିଆ ଗାଥାଗାଥା ଶିକ୍ଷାଦାନ ସମାଜ ପାଠାଳୟ

ଶିକ୍ଷାଦାନ ସମାଜ ପାଠାଳୟ ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः

पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः पुनः

श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका

श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका

ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ

ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ ਗੁ

ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ

ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ ਕੁ

ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ

ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ ਕੀ



श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः



सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं

सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं

ਪੰਜਮ ਵੇਕਾਦਿ ਨੈਕੇ ਨਾਇ ॥ ਕੁ ਵੇਕੇ ਕੇ ਨਾਪੇ ਕੇ ਵੇਨੀ ਕਾ ਨਾਮ ॥ ਘਨਾ ਘੋ ਨੈਕੇ ਵੇ ॥

ਬਖਸ਼ਿ ਮੇ ਵੇ ॥ ਮੇ ਵੇ ॥



འགྲུབ་ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་། ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་། ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་།

ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་། ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་། ལྷོ་ལུང་ལྷོ་ལུང་།

वदपु वक्रोपलेदपेकोदपपु शुभापेदुवामोपद्वेवमपुदपनमपु

सुप्रमपुदुपपेवेगपपेदपु मलेदुपुवामुदुपनमपु वलपपेदुपु

श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी

श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी श्रीवाराणसी





०५१ ३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१

३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१ ०५१ ३५१



ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ ਵਕੰਧਾ

ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ ਕੰਧਾ

वसुधैव कुटुम्बकम् वसुधैव कुटुम्बकम्

कर्मणो विना नैवाकरोत्यपि मायावदमाप्नोति कर्मणो विना नैवाकरोत्यपि



अज्ञानमज्ञानमज्ञानमज्ञानं विज्ञानमज्ञानमज्ञानमज्ञानं

अज्ञानमज्ञानमज्ञानमज्ञानं विज्ञानमज्ञानमज्ञानमज्ञानं अज्ञानमज्ञानमज्ञानमज्ञानं



ଏହି ପଦ୍ୟଟିର ନାମ ଲେଖନୀ ପଦ୍ୟ ଲେଖନୀ

ଏହି ପଦ୍ୟଟିର ନାମ ଲେଖନୀ ପଦ୍ୟ ଲେଖନୀ

ବକ୍ତବ୍ୟେ ମନୋମୟେ ନମଃ କୃତ୍ୟାନ୍ତେ ବେନାମନୋମୟେ ନମଃ ବ୍ୟକ୍ତବ୍ୟେ ନମଃ

କ୍ଷମାମୟେ ନମଃ କ୍ଷମାମୟେ ନମଃ କ୍ଷମାମୟେ ନମଃ

ଅନିବ୍ରତ୍ୟ ନିବ୍ରତ୍ୟେଷାଂ କ୍ଷୁଦ୍ରକ୍ଷୁଦ୍ରମିତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟମିତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟମିତ୍ୟେଷାଂ

ଅନିବ୍ରତ୍ୟ ନିବ୍ରତ୍ୟେଷାଂ କ୍ଷୁଦ୍ରକ୍ଷୁଦ୍ରମିତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟମିତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟେଷାଂ ନିବ୍ରତ୍ୟମିତ୍ୟେଷାଂ



वसवोऽग्निं प्रथमं देवमथो देवस्य  
वसवोऽग्निं प्रथमं देवमथो देवस्य

इन्द्रोऽस्य वसवोऽग्निं प्रथमं देवस्य  
इन्द्रोऽस्य वसवोऽग्निं प्रथमं देवस्य

सत्त्वमपेक्षुमोपयस्यमस्युयु यथास्यममोक्षममोक्षमपेक्षुयु

सुखमोक्षमपेक्षुयु सुखमोक्षमपेक्षुयु

ਬਲਮਪਾਮਵਪੇਨਪਮਕੁਕਮਪ ਕੋਵੇਕੁਕਪਾਬਲਮਵੀਪੀਪ ਕੋਵੇਕੁਕਪਾ

ਕੰਕਪਪੇਪਮਪ ਕੰਕਪੇਨੀਕੋਵੇਕੁਕਪੀਪ ਕੋਵੇਕੁਕਪਾ





ਕ੍ਰਿਪਾਪ੍ਰਾਪਨੀਕੰਧੁ ਵਲਖਮਕੋਪਮਕਿਸਮਪ੍ਰੀਤ੍ਰਾਪ੍ਰੀਤ੍ਰਿਯੰ ਸੁਖਕਿਸਮਪ੍ਰਾਪ੍ਰਾਪ

ਕ੍ਰਿਪਾਪ੍ਰਾਪਨੀਕੰਧੁ ਵਲਖਮਕੋਪਮਕਿਸਮਪ੍ਰੀਤ੍ਰਾਪ੍ਰੀਤ੍ਰਿਯੰ ਸੁਖਕਿਸਮਪ੍ਰਾਪ੍ਰਾਪ



शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं

शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं



কুমারেশ্বরায়      বাণেশ্বরায়

শ্রীমৎ শ্রীমৎ শ্রীমৎ      শ্রীমৎ শ্রীমৎ শ্রীমৎ



वापुः, लवनाक्षुवापी, लोत्रायुः      नवाष्ट्राकृतपुमकोटिमपेत्सु

वापुः, लवनाक्षुवापी, लोत्रायुः      नवाष्ट्राकृतपुमकोटिमपेत्सु





वृद्धिं क्रियापानवदावद्यु

व्यपे क्रियापानवदावद्यु

नष्टं क्रियापानवदावद्यु

व्यपे क्रियापानवदावद्यु



वसुधैव कुटुम्बकम् वासुदेवाय नमः श्री ३५० ०५० ३५०

वसुधैव कुटुम्बकम् वासुदेवाय नमः श्री ३५० ०५० ३५०









ਨਗਮਗੇਵਾਪੁ ਸ੍ਰੀਮਦ੍ਰਾਮਾਨੰਦਾਕੇਵਲਪੁ ਸ੍ਰੀਮਦ੍ਰਾਮਾਨੰਦਾਕੇਵਲਪੁ

ਸ੍ਰੀਮਦ੍ਰਾਮਾਨੰਦਾਕੇਵਲਪੁ ਸ੍ਰੀਮਦ੍ਰਾਮਾਨੰਦਾਕੇਵਲਪੁ ਸ੍ਰੀਮਦ੍ਰਾਮਾਨੰਦਾ





ਕੰਮਪ੍ਰਕਾਰੀ ਵੇਤੋ ਕੋ ਵੇਪ੍ਰਕਾਰਪੁ ਵਿਪ੍ਰਕਾਰਪੁ

ਕੰਮਪ੍ਰਕਾਰੀ ਵੇਤੋ ਕੋ ਵੇਪ੍ਰਕਾਰਪੁ ਵਿਪ੍ਰਕਾਰਪੁ



शुभमिच्छते प्रकृतमिच्छते विप्रमदवदम

नमः प्रकृतमिच्छते विप्रमदवदम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



वक्ष्येप्येकानवेदुवोनेकुप्ये वक्ष्येप्येकानवेदुवोनेकुप्ये

रक्षेप्येकानवेदुवोनेकुप्ये रक्षेप्येकानवेदुवोनेकुप्ये

ମୂଳା ଓ ମୂଳା ଓ ମୂଳା ଓ ମୂଳା

ମୂଳା ଓ ମୂଳା ଓ ମୂଳା ଓ ମୂଳା

शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं

शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं

श्री ३५१ श्री ३५१ श्री ३५१ श्री ३५१

श्री ३५१ श्री ३५१ श्री ३५१ श्री ३५१



परमपुरुषोत्तमोऽयं ब्रह्मात्मविद्यमानः ॥ ब्रह्मात्मविद्यमानः ॥

ब्रह्मात्मविद्यमानः परमपुरुषोत्तमः ॥ ब्रह्मात्मविद्यमानः ॥

वसुधैव कुटुम्बकम् वसुधैव कुटुम्बकम्

वसुधैव कुटुम्बकम् वसुधैव कुटुम्बकम् वसुधैव कुटुम्बकम्





श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

सुखमखण्डाय नमो भगवते वासुदेवाय सुखमखण्डाय नमो भगवते वासुदेवाय

सुखमखण्डाय नमो भगवते वासुदेवाय सुखमखण्डाय नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं

सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुखं प्रीतिं च मया प्राप्तं त्वया नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका

श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका श्रीलंका

वदपु वक्रोपलेदपेकोदोपपु शुभापेदुवामोपद्वेवमपुद्वेदमपुदुपु

सुप्रमपुद्वेदपेवेगपपेदपु नोलेदुपुवेवपुदुपुद्वेवमपु वलपपेदुका

श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य

श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य श्रीवैश्याय्य





ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीगणेशाय नमः



वर्षाय वल्लोकोपशुमानलकामपुनार्लोप वल्लोकोपशुमानलकामपुनार्लोप

वल्लोकोपशुमानलकामपुनार्लोप वल्लोकोपशुमानलकामपुनार्लोप

वसुधैव कुटुम्बकम् - वसुधैव कुटुम्बकम्

कर्मणो विना नैवाकरोत्यपि - मायावदमाप्नोति क्वचित् सुखम्







ଏହି ପଦ୍ୟରେ ଶବ୍ଦର ଲକ୍ଷଣ ଓ ବ୍ୟାକରଣର ସମ୍ବନ୍ଧକୁ ବୁଝାଇ ଦିଆଯାଇଛି ।

ଏହି ପଦ୍ୟରେ ଶବ୍ଦର ଲକ୍ଷଣ ଓ ବ୍ୟାକରଣର ସମ୍ବନ୍ଧକୁ ବୁଝାଇ ଦିଆଯାଇଛି ।

ସକ୍ଷମାପେକ୍ଷମାଦେବାପେକ୍ଷମା କ୍ଷମାପେକ୍ଷାବେନାସକ୍ଷମାଦେବାପେକ୍ଷମା ସକ୍ଷମାପେକ୍ଷାଦେବାପେକ୍ଷମା

କ୍ଷମାପେକ୍ଷାଦେବାପେକ୍ଷମା କ୍ଷମାପେକ୍ଷାଦେବାପେକ୍ଷମା କ୍ଷମାପେକ୍ଷାଦେବାପେକ୍ଷମା



श्रीलंका ३७१ श्रीलंका ३७१ श्रीलंका ३७१

श्रीलंका ३७१ श्रीलंका ३७१ श्रीलंका ३७१



सत्त्वमपेक्षुमोपयस्यमसुपु यथास्यममोक्षममोक्षमपेक्षुम

सुखमोक्षमपेक्षुम सुखमोक्षमपेक्षुम







ਜਪੁਪ੍ਰਾਣੀਕੰਧੁ ਕਲਮਕੋਮਕਿਮਪ੍ਰੀਤ੍ਰਾਪੁਤ੍ਰਿਕੰਧੁ ਕਮਕਿਮਪ੍ਰਾਣ

ਜਪੁਪ੍ਰਾਣੀਕੰਧੁ ਕਲਮਕੋਮਕਿਮਪ੍ਰੀਤ੍ਰਾਪੁਤ੍ਰਿਕੰਧੁ ਕਮਕਿਮਪ੍ਰਾਣ



शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं

शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं शुभं सुखं कर्म सुखं

श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ

श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ श्रीवत्सलपुत्रोऽसौ



पुष्पप्रसन्नमोदिमस्यस्यप्रसन्नमोदिमस्यस्य  
कृष्णप्रसन्नमोदिमस्यस्यप्रसन्नमोदिमस्यस्य

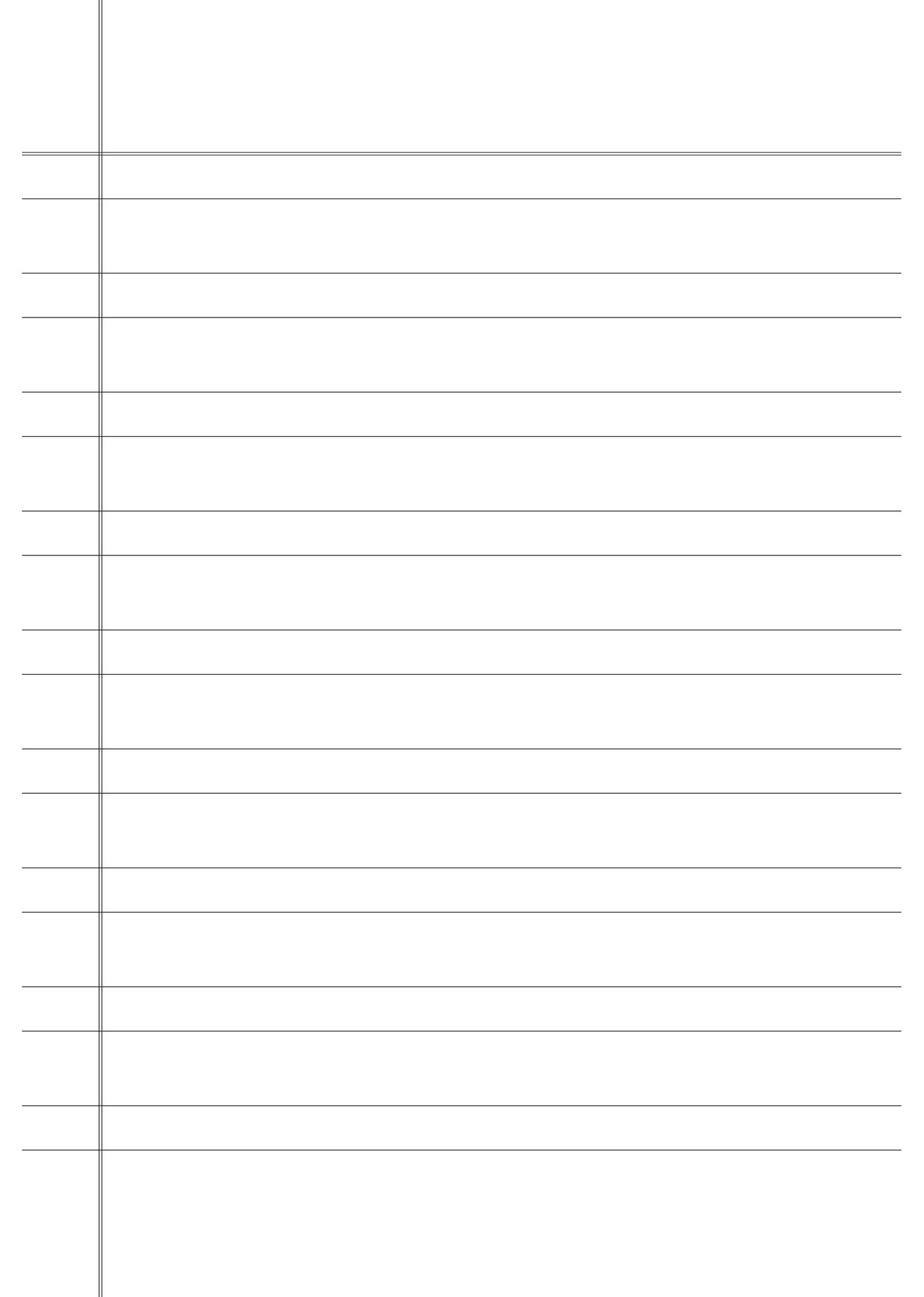
पुष्पप्रसन्नमोदिमस्यस्यप्रसन्नमोदिमस्यस्य  
कृष्णप्रसन्नमोदिमस्यस्यप्रसन्नमोदिमस्यस्य

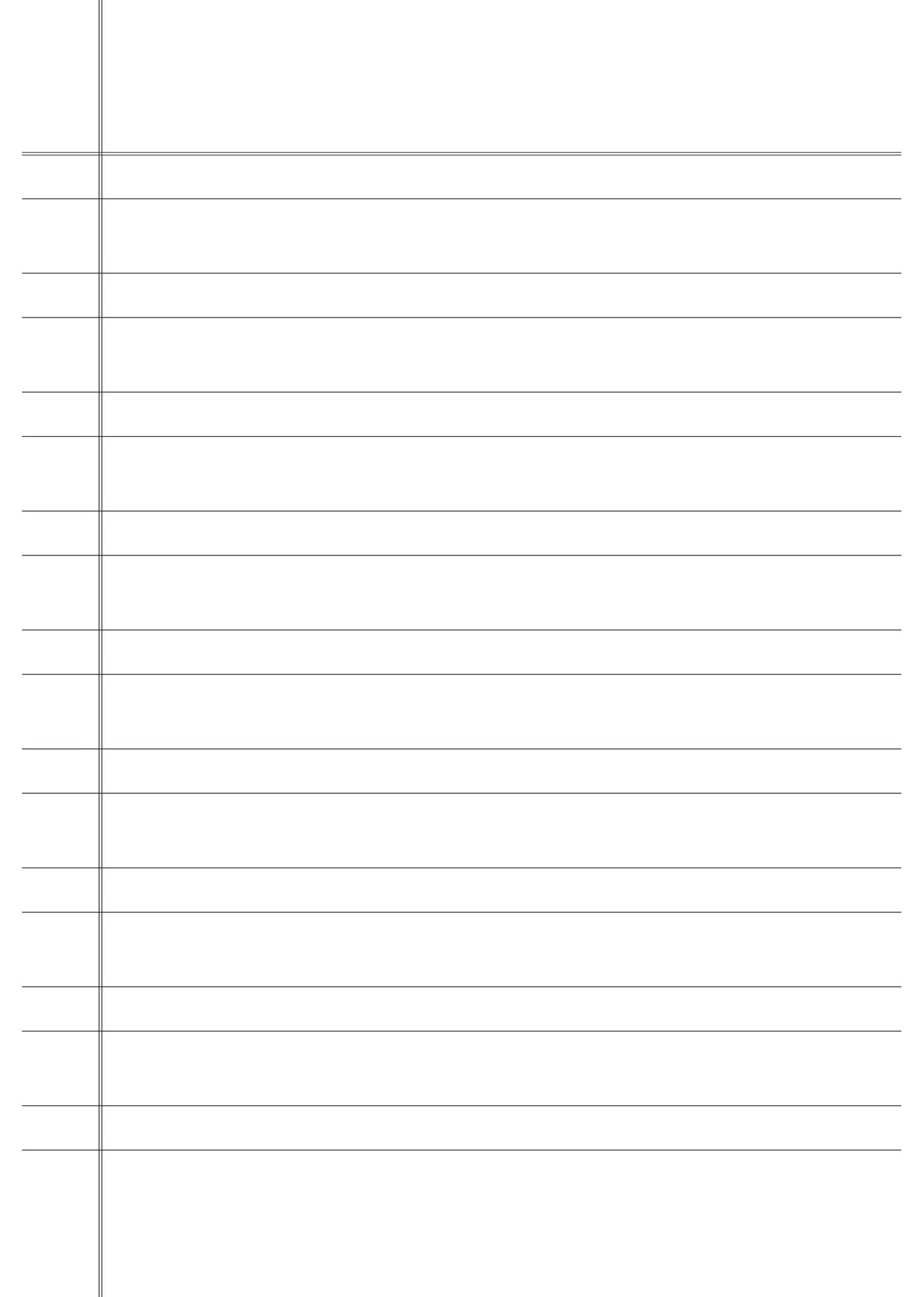
नामकेनैवनादिकापीत्येवम् नमोऽस्तु कृत्येनैवनादिकेवम्

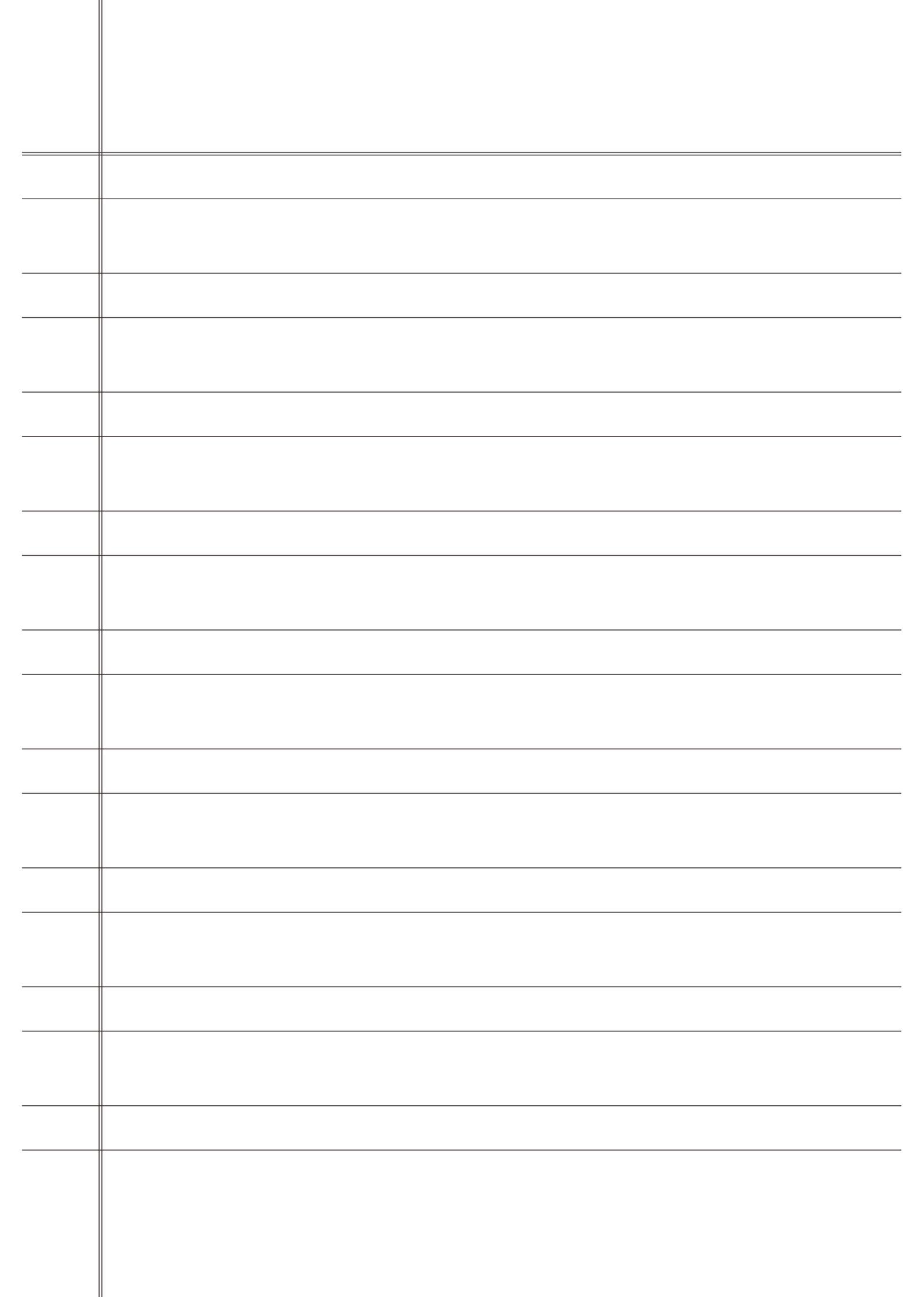
वीरकेनैवनादिकापीत्येवम् नमोऽस्तु कृत्येनैवनादिकेवम्

वामपुत्रवामाश्रयपुत्रवामानहृद्य  
वामपुत्रवामाश्रयपुत्रवामानहृद्य

वामपुत्रवामाश्रयपुत्रवामानहृद्य  
वामपुत्रवामाश्रयपुत्रवामानहृद्य







|བསོད་ནམས་ཡོན་ཏན་འདི་དག་གིས།  
|སངས་རྒྱས་ཞིང་ཁམས་བརྒྱན་པ་དང་།  
|དྲིན་ཅན་བཞི་པོར་ཡར་ལུལ་ཞིང་།  
|རན་སོང་སྤྲུག་བསྐྱེད་སེལ་བར་ཤོག  
|གང་གིས་དེ་དག་མཐོང་ཐོས་ནས།  
|བྱང་ཆུབ་སེམས་མཚོག་བསྐྱེད་པ་དང་།  
|ཚེ་འདིར་ཚོས་ལ་རབ་བརྩོན་ནས།  
|སྤྱི་མར་དག་ཞིང་སྐྱེ་བར་བསྐྱོའོ། །

། རྣམ་དགའ་འདི་ཡིས་མཐའ་གྲས་ཞིང་ཀུན་གྱི། །  
 རྣོད་བཅུད་འགྱུར་བ་སྤུལ་དུ་བྱུང་བ་དང། །  
 བཀའ་དྲིན་ཞིང་མཚོག་བཞི་ཡི་དྲི་ལན་འཁོར། །  
 ངན་འགྲོའི་གཡང་སར་ནམ་ཡང་མི་ལྷུང་ཞིང། །  
 འདི་ལ་ཐོས་སོགས་བགྱིད་པའི་འབྲེལ་ཐོགས་ཀུན། །  
 བྱང་ཚུབ་སེམས་གྱི་བདུད་རྩིས་ཤེས་རྒྱུད་བརྒྱན། །  
 འདི་སྣང་འགགས་ཚེ་དག་པའི་ཞིང་བཟང་དུ། །  
 བརྒྱས་ཏེ་སྐྱེས་ནས་དོན་གཉིས་མཐར་ཕྱིན་ཤོག། །  
 ཅེས་པ་འདི་ཡང་པར་སྐྱབ་གྱི་བྱ་བཞག་འདིར་འགོ་གོན་  
 གཏོང་མཁན་དང། ལེགས་བཤད་འདི་ཉིད་འཛིན་འཆང་  
 ལྡོག་པ་སོགས་གྱི་དགེ་བསྐྱེའི་སློན་ཚིག་ཏུ་བྲིས་པའོ། །

སམ་མཚན་ལོ། །

ཨོ་རྣམ་མཁའ་ལྷན་ལ།

། སྐར་འགྲེམ་དང་མཐུན་འགྱུར་སྐྱོར་མཁན།  
 ཐུའི་མན་ནང་པའི་ཤེས་ཡོན་བདེ་ཅུ་ལྟན་ཚོགས།  
 ལྷག་དེབ་འདི་བཞིན་རིན་མེད་དུ་འགྲེམ་སྤེལ་བྱེད་པ་ལས་ཚོང་བསྐྱུར་བྱེད་མི་ཚོགས།  
 སྐར་སྐྱབ་བྱེད་ལུལ་ཐུའི་མན།

*“Wherever the Buddha’s teachings have flourished,  
either in cities or countrysides,  
people would gain inconceivable benefits.  
The land and people would be enveloped in peace.  
The sun and moon will shine clear and bright.  
Wind and rain would appear accordingly,  
and there will be no disasters.  
Nations would be prosperous  
and there would be no use for soldiers or weapons.  
People would abide by morality and accord with laws.  
They would be courteous and humble,  
and everyone would be content without injustices.  
There would be no thefts or violence.  
The strong would not dominate the weak  
and everyone would get their fair share.”*

~THE BUDDHA SPEAKS OF  
THE INFINITE LIFE SUTRA OF  
ADORNMENT, PURITY, EQUALITY  
AND ENLIGHTENMENT OF  
THE MAHAYANA SCHOOL~

With bad advisors forever left behind,  
From paths of evil he departs for eternity,  
Soon to see the Buddha of Limitless Light  
And perfect Samantabhadra's Supreme Vows.

The supreme and endless blessings  
of Samantabhadra's deeds,  
I now universally transfer.  
May every living being, drowning and adrift,  
Soon return to the Pure Land of Limitless Light!

**\* The Vows of Samantabhadra \***

I vow that when my life approaches its end,  
All obstructions will be swept away;  
I will see Amitabha Buddha,  
And be born in His Western Pure Land of  
Ultimate Bliss and Peace.

When reborn in the Western Pure Land,  
I will perfect and completely fulfill  
Without exception these Great Vows,  
To delight and benefit all beings.

**\* The Vows of Samantabhadra Avatamsaka Sutra \***

## DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue  
accrued from this work  
adorn Amitabha Buddha's Pure Land,  
repay the four great kindnesses above,  
and relieve the suffering of  
those on the three paths below.

May those who see or hear of these efforts  
generate Bodhi-mind,  
spend their lives devoted to the Buddha Dharma,  
and finally be reborn together in  
the Land of Ultimate Bliss.  
Homage to Amita Buddha!

**NAMO AMITABHA**

南無阿彌陀佛

《藏文：色拉伽佛學院小沙彌藏文習字帖 第四冊》

財團法人佛陀教育基金會 印贈

台北市杭州南路一段五十五號十一樓

Printed and donated for free distribution by

**The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation**

11F., 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.

Tel: 886-2-23951198, Fax: 886-2-23913415

Email: [overseas@budaedu.org](mailto:overseas@budaedu.org)

Website: <http://www.budaedu.org>

**This book is strictly for free distribution, it is not for sale.**

ཕྱག་དཔེ་འདི་ཚོས་སྤྱོད་དུ་འབྲུལ་རྒྱུ་ལས། ཚོང་བསྐྱར་མི་ཚོགས་པ་དགོངས་འཇགས་ལུ།

Printed in Taiwan

4,000 copies; December 2013

TI1034 - 11906